शनि देव की कथा (Shani dev ki katha)

शनि देव की कथा (Shani dev ki katha)
एक बार नौ ग्रहों में इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि उनमें सबसे श्रेष्ठ कौन है
है, देखते ही
देखते यह बहस बहुत बड़ गयी गयी, सभी ग्रहों ने बहस को निपटाने केलिए
ए, भगवान इंद्र केपास इंद्र केपास
गए और उनसे यह निर्णय करने कहा की उनमें सबसे श्रेष्ठ कौन है
है, उनकी यह बातें सुनकर कर
भगवान इंद्र भी सोच में पड़ गए
गए, बहुत सोच विचार करने केबाद उन्होंने कहा की इसका निर्णय
ेकहा की इसका निर्णय
मैं नहीं ले सकताहीं ले सकता, इसका जवाब आप लोगो को धरती में उज्जैन नगरी केबेहद प्रतापी एवं
गरी केबेहद प्रतापी एवं
योग्य राजा विक्रमादित्य केपास मिलेगा
लेगा, आप सभी उनकेपास जाकर उनसे सवाल करे
से सवाल करे, वह
अवश्य ही आप लोगो केसवाल का जवाब देंगे।
अपने सवाल का समाधान खोजने केलिए
ए, उन्होंने सामूहिक रूप से धरती पर उज्जैन नगर में
गर में
राजा विक्रमादित्य से मिलने का फैसला किया। सभी नव ग्रह राजा विक्रमादित्य केमहल पहुंचे
त्य केमहल पहुंचे,
महल पहुंचने केउपरांत वे सभी राजा विक्रमादित्य से अपना सवाल किया
या, उनकेसवाल सुनकर कर
राजा विक्रमादित्य को भी दुविधा का सामना करना पड़ा कि उन्होंने मन ही मन सोचा की
सोचा की
प्रत्येक ग्रह में अद्वितीय शक्तियां होती हैं जो उन्हें महान बनाती हैं। किसी को श्रेष्ठ या निम्न

केरूप का समझना संभावित रूप से मेरी व मेरी प्रजा केलिए परेशानी का
ी का कारण बन सकता
सकता
है।
अपने चिंतन केबीच
केबीच, राजा ने एक योजना तैयार की। उन्होंने सोना
ा, चांदी, कांस्य, तांबा, सीसा,
लोहा, जस्ता, अभ्रक और लोहा सहित नौ अलग
ौ अलग-अलग प्रकार की धातुएं बनाईं और प्रत्येक धातु ाईं और प्रत्येक धातु
को एक केपीछे एक आसन पर रखा। फिर उन्होंने देवताओं से कहा कि हे देव आप सभी एक
हे देव आप सभी एक
- एक कर आसन ग्रहण करें
करें, फिर सभी देवताओं ने अपनाा-अपना स्थान ग्रहण कर लिया

या, तो
राजा विक्रमादित्य ने घोषणा की
ा की, "मामला सुलझ गया है। आप में से सबसे बड़ा वह है जो
सबसे आगे बैठता है।" इस फैसले से शनिदेव क्रोधित हो गए और उन्होंने नाराजगी जताते हुए
ाराजगी जताते हुए
कहा, "राजा विक्रमादित्य
त्य, यह मेरा अपमान है। आपने मुझे पीछे धकेल दिया और इसकेलिए
ए
मैं आपको बर्बाद कर दूंगा। आप मेरी शक्तियों को कम आंकते हैं।"
यों को कम आंकते हैं।"
शनिदेव ने आगे बताया े आगे बताया, "सूर्य एक राशि में एक माह में एक माह, चंद्रमा ढाई दिन
, मंगल डेढ़ माह, जबकि
बुध और शुक्र एक माह तक रहते हैं और बृहस्पति एक राशि में तेरह माह तक रहता है।"
में तेरह माह तक रहता है।"
किन्तु मैं इन सबसे अलग साढ़े सात साल तक किसी भी राशि में रह सकता हूँ। मेरे क्रोध ने
े
सबसे शक्तिशाली देवताओं को भी पीड़ित किया है। यह मेरा ही प्रभाव था जिसकेकारण

भगवान राम को राम को साढ़े सात साल केलिए वनवास जाना पड़ा और तो और रावण भी मेरे प्रभाव
भी मेरे प्रभाव
से नहीं बच पायाहीं बच पाया, मेरे ही साढ़े साती प्रभाव केकारण रावण को मृत्यु की प्राप्ति हुई हैं। अब
हुई हैं। अब,
तुम्हे ज्ञात हो जायेगा मेरे साढ़े साती का प्रभावे साती का प्रभाव, तुम भी मेरे क्रोध से नहीं बचोगे।" अपने क्रोध
े क्रोध
केसाथ शनिदेव घटनास्थल से चले गएास्थल से चले गए, जबकि अन्य देवता संतुष्टहोकर वह से चले गए। अन्य देवता संतुष्टहोकर
वह से चले गए।

जीवन हमेशा की तरह चलता रहा हमेशा की तरह चलता रहा, राजा विक्रमादित्य ने अपना न्यायपूर्ण शासन जारी रखा।
जारी रखा।
समय बीतता गया, लेकिन शनिदेव अपने द्वारा सहे गए कष्ट को नहीं भूले। एक दिन
, शनिदेव
राजा की परीक्षा लेने केइरादे से एक घोड़ा व्यापारी केभेष में राज्य में आये। यह पता चलने
े
पर राजा विक्रमादित्य ने अपने घुड़सवार को घोड़े खरीदने केलिए भेजा। अश्वपाल
ए भेजा। अश्वपाल, घुड़सवार,
लौट आया और राजा को सूचित किया कि घोड़े असाधारण मूल्य केथे।
मूल्य केथे।
उत्सुक होकर, राजा ने व्यक्तिगत रूप से एक शानदार और मजबूत घोड़े का निरीक्षण किया
या,
और उसकी गतिविधियों का निरीक्षण करने केलिए उसे खड़ा किया। हालाँकि
, जैसे ही राजा
विक्रमादित्य काठी में बैठेत्य काठी में बैठे, घोड़ा बिजली की गति से उछला
ला, और उन्हें घने जंगल में ले गया े जंगल में ले गया,

जहाँ उसने उन्हें फेंक दिया और फिर गायब हो गया। जंगल में खोया हुआ राजा अपने राज्य
ेराज्य
में वापस आने केरास्ते की तलाश में भटकता रहाेकेरास्ते की तलाश में भटकता रहा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
हीं हुआ।
कुछ समय तक भटकने केबाद
ेकेबाद, राजा को भूख और प्यास की हालत में एक चरवाहा दिखाई
खाई
दियाया, राजा चारवाहे केपास जाकर पानी मांगाी मांगा, दयालु चरवाहे ने राजा को पानी पिलाया।
लाया।
कृतज्ञता स्वरूप राजा ने उसे अपनी एक अंगूठी उपहार में दे दी। फिर कुछ देर चारवाहे से
देर चारवाहे से
बातचीत करने केबाद राजा ने चरवाहे से आगे केरस्ते केबारे में पूछकर जंगल में आगे बढ़ते
ते
हुए एक शहर में पहुँच गया।ँच गया।शहर में राजा ने एक धनी व्यापारी (सेठ) की दुकान पर विश्राम
श्राम
किया। सेठ से बातचीत करते समय राजा ने बताया कि वह उज्जैन नगर से आया है. फिर र
राजा ने सेठ से नगर केबारे में पूछा और
ा और राजा वह सेठ की दुकान पर ही रुक गया. व्यापारी पर ही रुक गया. व्यापारी
को अपने दुकान की बिक्री में वृद्धि का अनुभव हुआ
ुभव हुआ, उसने राजा को असाधारण रूप से
रूप से
भाग्यशाली समझा। राजा से प्रभावित होकर सेठ ने उसे अपने घर रात्रि भोज का निमंत्रण

दिया।या।

सेठ केघर केभीतर एक कमरे में खूंटी पर एक सोने का हार लटका हुआ था। सेठ ने कुछ

देर केलिए राजा को उस कमरे में अकेला छोड़ दिया। जब सेठ वापस लौटा तो उसने देखा कि

हार रहस्यमय तरीकेसे गायब हो गया है। भ्रमित और क्रोधित होकर
त होकर, सेठ ने हार केबारे में ेहार केबारे में
पूछा और राजा ने उसकेअचानक गायब होने केबारे में बताया।
ेकेबारे में बताया। अपनी बेशकीमती संपत्ति केि के
खोने से क्रोधित सेठ ने सजा केतौर पर राजा केहाथ और पैर काटने का आदेश दिया। राजा
या। राजा
विक्रमादित्य ने इस क्रूर परीक्षा को सहन किया और राजा केहाथ और पैर काटकर शहर की या और राजा केहाथ और पैर काटकर
शहर की
सड़क पर छोड़ दिया गया। कुछ समय बाद
समय बाद, विक्रमादित्य को एक तेल वाले ने देखाेदेखा, तेल वाले
ने उन्हें अपने साथ ले गया। राजा दिन-ब-दिन तेल वाले केसाथ काम करता तेल वाले केसाथ काम करता था और तेल वाले
द्वारा आदेश किये गए कार्यो को किया करता
या करता, विक्रमादित्य का जीवन कठिनाइयों और परिश्रम श्रम

से भरा इसी तरह चलता रहा। इसी अवधि केदौरान उन्हे शनि की "साढ़े
उन्हें शनि की "साढ़े साती" नामक
ामक
ज्योतिषीय घटना का अनुभव हुआ
ुभव हुआ, जो वर्षा ऋतु की शुरुआत केसाथ मेल खाती थी।
ऋतु की शुरुआत केसाथ मेल खाती थी।

एक दिन
, जब राजा मेघ मल्हार गा रहे थे, तो नगर केराजा की बेटी राजकुमारी मोहिनी उनकी
की
आवाज़ सुनकर मंत्रमुग्ध हो गयी और राजकुमारी ने अपने नौकरानी को आदेश दिया की जाओ
या की जाओ
इस मनमोहक गाने वाले को मेरे पास लेकर आओ। नौकरानी राजकुमारी केआदेश अनुसार
ुसार
विक्रमादित्य केपास गयीत्य केपास गयी, नौकरानी ने देखा की विक्रमादित्य विकलांग है. नौकरानी ने महल ेमहल
वापस लौटकर राजकुमारी को मेघ मल्हार गा रहे विक्रमादित्य और उनकी शारीरिक विकलांगता
कलांगता
केबारे में बताया, लेकिन राजकुमारी का दिल उनकी मधुर व उनकेगीत पर ही अटका रहा।
केगीत पर ही अटका रहा।
विक्रमादित्य केविकलांगता से विचलित हुए बिनाा, राजकुमारी ने उनसे शादी करने का फैसला
ेका फैसला
किया।या।
जब मोहिनी केमाता
ी केमाता-पिता को राजकुमारी केफैसले केबारे में पता चला तो उन्हें बहुत आश्चर्य
हुआ। माता-पिता ने अपनी बेटी को बहुत समझाने का प्रयास कियाया, किन्तु राजकुमारी ने उनकी की
एक बात नहीं सुनी और कहा कि उसकेभाग्य में राजा की रानी बनने की संभावना है और
ा है और
रही बात की वह एक अपाहिज से विवाह क्यों करना चाहती है
ा चाहती है, तो मैं केवल उन्ही से विवाह वाह
करुँगींगी, इतना कहकर राजकुमारी भूख हड़ताल पर बैठ गयी।ा कहकर राजकुमारी भूख हड़ताल पर बैठ गयी।
अपनी बेटी की खुशी सुनिश्चित करने केलिए
ए, राजा और रानी अंततः मोहिनी की शादी विकलांग
कलांग
विक्रमादित्य से करने केलिए सहमत हो गए। उनकी शादी हो गई और दोनों ने एक साथ ेएक साथ
अपना जीवन शुरू किया। उसी दिन
, रात्रि में शनि देव विक्रमादित्य केसपने में आये में आये, सपने में ेमें
शनि देव ने कहा देखा राजन मेरे साढ़े साती का प्रकोप
ेसाती का प्रकोप, इस पर विक्रमादित्य ने शनि देव से
ेशनि देव से
माफ़ी मांगी और कहा की हे शनि देव मुझे माफ़ कीजियेगा
येगा, आपने जितना अधिक दुःख मुझे
क दुःख मुझे
दिया हैंया हैं, इस संसार में किसी और को न दीजियेगा।

येगा।
शनि देव ने उत्तर दिया
या, राजन मैं आपकेअनुरोध को स्वीकार करता हूं
ुरोध को स्वीकार करता हूं, मैं तुम्हे बताता हूँ की ँकी
जो लोग मेरी पूजा करते हैं, उपवास करते हैं और मेरी कहानियाँ सुनते हैं
ते हैं, उन्हें मेरा आशीर्वाद
द
हमेशा मिलेगा।" अगली सुबह जब राजा विक्रमादित्य जागे तो उन्होंने पाया कि उनकेहाथ
केहाथ-पैर
चमत्कारिक ढंग से वापस आ गए हैं। अपने हृदय की गहराइयों से
े हृदय की गहराइयों से, उन्होंने शनिदेव केप्रति

अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। राजकुमारी भी विक्रमादित्य केठीक हुए अंगों को देखकर त्य केठीक हुए अंगों को देखकर
आश्चर्यचकित रह गई। जवाब में
त रह गई। जवाब में, राजा ने शनिदेव केदैवीय प्रकोप की कहानी सुनाई।
ाई।
जब यह बात सेठ को पता चली तो, सेठ तेजी से उनकेनिवास पर गया और विनम्रतापूर्वक
क
राजा विक्रमादित्य केसामने झुककर क्षमा मांगी। राजा ने सेठ को क्षमा कर दिया
या, और सेठ ने े
राजा को भोजन केलिए अपने घर आमंत्रित किया। भोजन करते समय
करते समय, एक अप्रत्याशित घटना
ा
घटी जब खूंटी ने चोरी हुआ हार उगल दिया। यह देखकर सेठ बहुत खुश हुआ और सेठ ने
े
राजा को अपनी बेटी से शादी करने का आग्रह किया
या, सेठ केआग्रह को विक्रमादित्य ने स्वीकार
े स्वीकार
कियाया, फिर सेठ ने अपनी बेटी और विक्रमादित्य का विवाह कर दिया।या।

विक्रमादित्य अपनी दो पत्नियोंियों, राजकुमारी मोहिनी और सेठ की बेटी केसाथ अपने राज्य
े राज्य
उज्जैन लौटने पर
े पर, राजा विक्रमादित्य का उनकी प्रजा ने गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने
े
अपने साम्राज्य में यह घोषणा कर दी कि अब से शनिदेव को सभी देवताओं में सबसे अग्रणी
ी
माना जाएगा। उन्होंने अपने लोगों से शनि देव केसम्मान में व्रत रखने और उनकी व्रत कथाएँ ँ

सुनने का आग्रह किया।
या। शनिदेव इस घोषणा से प्रसन्न हुए
हुए, और जैसे ही लोगों ने लगन से व्रत
से व्रत

रखे और कहानियाँ सुनीं
ीं; उनका आशीर्वाद राजा और प्रजा को प्रचुर मात्रा में मिलाला, जिससे सभी ससे सभी
को खुशियाँ मिलीं।
लीं।